दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 8 से 17 अप्रैल तक मौन साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 13 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 688 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सिरसा**, हरियाणा में 14 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 118 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 19 से 24 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **हरिद्वार** में 27 से 30 अप्रैल तक झाबुआ के साधकों के लिए साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **हरिद्वार** में 2 से 5 मई तक झाबुआ के साधकों के लिए साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 5 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुया जिसके पश्चात् 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कंडाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 12 मई को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 17 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **काठमांडू**, नेपाल में 16 से 18 मई तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 18 मई को 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्री रामशरणम् दिल्ली** में मार्च से जून तक 170 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी**, हिमाचल प्रदेश में 26 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 48 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालंधर**, पंजाब में 2 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 163 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चंडीगढ़** में 9 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 80 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचलप्रदेश में 14 से 16 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सैल्सबर्ग**, पैनसिलवेनिया अमेरिका में 27 से 30 जून तक खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें नाम दीक्षा भी होगी।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 30 जून से 3 जुलाई तक साधना सत्संग का आयोजन होगा।

निर्माणाधीन श्री रामशरणम् की प्रगति

- **नागोद**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् हॉल का लैंटर कुछ समय पहले डल गया था और अब फर्श और लाइट फीटिंग का कार्य तेजी से चल रहा है।
- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में श्री रामशरणम् में खुले सत्संग के लिए अखण्ड जाप का कमरा व 150 साधकों के ठहरने के लिए स्थान का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है और इसके दो तीन माह में पूरे होने की आशा है। ■

आप बीती

भ्रम भूल में भटकते, उदय हुए जब भाग।
मिला अचानक गुरु मुझे, लगी लगन की जाग।।

"नाम दीक्षा" के बाद मेरे जीवन में आए बदलाव और अनुभवों की फैरिस्त बनाऊँ तो शायद कई अंक छप जाएँ। "रंक से राजा बनाना" "वैभवशाली जीवन देना" तो हमारे गुरुजन अपनी दृष्टि मात्र से ही कर देते हैं। संगत में आने से साधकों में जो आध्यात्मिक उन्नति और व्यवहारिक परिवर्तन आते हैं, उनका तो कहना ही क्या।

विवाह से पूर्व, मुझे "नाम दीक्षा", सत्संग", "गुरु शिष्य परम्परा" और "निराकार ईश्वर की भक्ति" में न तो कोई विश्वास ही था और न ही कोई रुचि। "श्री रामशरणम्" संस्था से परिचय तो था, किन्तु कभी आना नहीं हुआ था। मेरे ससुराल में सभी यहाँ के रंग में रंगे हुए थे। मेरी डोली मायके से बिदा होकर "श्री रामशरणम्" ही आई। इस स्थान की सौम्यता, सादगी और अनुशासनबद्धता को देखकर एक अद्‌भुत सा आकर्षण अनुभव हुआ। उत्सुकतावश और पतिव्रत धर्म निभाते हुए मैंने 15 ही दिनों में "नाम दीक्षा" ले ली। एक नए परिवार में जो मुश्किलें एक नव–विवाहिता को होती हैं–मुझे भी हुईं। काफी परेशान और उदास रहती। जब भी अवसर मिलता पूजनीय प्रेम जी महाराज के दर्शनों के लिए आने लगी।

श्री महाराज जी की दृष्टि मात्र से मेरी सहनशीलता बढ़ी और धीरे– धीरे मेरे वैवाहिक जीवन की गाड़ी पटरी पर आ गई । एक रात मुझे ऐसा सपना आया कि मैं अपनी नन्हीं बेटी को लिए एक बग्गी में बैठी हूँ जिसे 1 पगड़ी और चेक वाला कोट पहने एक वृद्ध चला रहे हैं । वह चित्र, आज 31 वर्ष बाद भी मेरे चित् में ताजा है। मुझे आश्वासन मिल गया कि गुरु महाराज ही मेरी नैय्या के खेवैया हैं और मुझे केवल उनके बताए हुए मार्ग पर चलना है। महाराज जी के शरीर छोड़ने के बाद डर लगने लगा कि अब मुझे कौन रास्ता दिखाएगा ?

एक वरिष्ठ सज्जन, जिनका, प्रेम जी महाराज जी से बहुत मिलना होता था, कभी–कभी मुझे भी मिलते। वे जब भी मिलते–अश्रुभरे नेत्रों से सिर्फ गुरुवर की ही बातें करते थे। मुझे ऐसे अनुभव होता कि उन सज्जन के माध्यम से महाराज जी मुझे आश्वासन दे रहे हैं कि "वे" हमेशा मेरे अंग – संग हैं । ऐसा ही हुआ नौकरी में, गृहस्थी में, कई उतार–चढ़ाव आए किन्तु महाराज जी की कृपा से धैर्य बना रहा और सब काज ठीक होते चले गए।

एक बार सिलेंडर खरीदने के पैसे कुछ कम पड़ गए। पति दफ़्तर जा चुके थे। मुझे बहुत घबराहट हुई कि अगर सिलेंडर वाला आया तो उसे पैसे कहाँ से दूँगी और अगर वो बिना दिए चला गया तो डाँट पड़ेगी कि पैसे रखे क्यों नहीं। मैंने महाराज जी के आगे प्रार्थना की। आप विश्वास नहीं करेंगे–दो पड़ोसी मेरे घर आकर पैसे देकर गए कि हमने तुझ से जो चीज मँगवाई थी उसके पैसे रख लो। पूरे उतने पैसे, जिनमें सिलेंडर लिया जा सके।

परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज जी के आने के बाद पहली बार साधना सत्संग में सम्मिलित होने का अवसर मिला। बहुत उच्च श्रेणी के और बहुत वरिष्ठ साधकों के साथ 5 रात्रि रहने का सुअवसर मिला। उन साधिकाओं की अविचल गुरु भक्ति, श्रद्धा, विश्वास और उनकी अनुशासन बद्धता से नया उत्साह मिला। आत्मनिरीक्षण का, अपने आप को सुधारने का (जिससे कि गुरु कृपा का पात्र बन सकूं) अवसर मिला। बहुत आत्मग्लानि हुई कि कहाँ ये उच्च श्रेणी के गुरु कृपा के पात्र, ये

वरिष्ठ साधक और कहाँ मैं–विकारों से भरी। बहुत कुछ पाया उन 6 दिनों में। पहली बार, गीता जी का पाठ पड़ा। कुछ ज़्यादा समझ नहीं आया, पर ऐसा जरूर लगा कि पूजनीय गुरूवर मुझे सुधारने के लिए यहाँ लाए हैं । परिवार से दूर रह कर समझ आया कि मेरे माता–पिता ने मुझे अच्छा, सच्चा, सुखमय जीवन देने के सभी अनथक प्रयत्न अवश्य किए, किन्तु, इस "मानव जीवन की महत्ता" और "उसको जीने की कला" तो गुरु महाराज ने ही सिखाई।

सत्संग की समाप्ति पर लगा कि आज,एक बार फिर, मेरे पिता मेरी डोली इस संसार रूपी ससुराल में भेज रहे हैं। इस शिक्षा के साथ –

"जीवन डोरी सौंप दो, राम जी के हाथ में।
डगर-डगर पर पाओगे राम जी को साथ में"

इन भावों के साथ महाराज जी को पत्र लिखा किन्तु देने का साहस नहीं जुटा पाई। जरूरत भी नहीं थी। भावों को भली भाँति पढ़ लेने में गुरुवर अग्रणीय हैं। शत् शत् नमन। जय जय राम। ■

Children Section

Growing love in your heart

Your heart is a physical organ in your body which is a little larger than the size of your fist. So really it is not that very big, but it can hold enough love for the entire universe. When you love like that you also receive unlimited love back in return. Imagine feeling and enjoying so much love. Wouldn't it be the best feeling in the world? So how do we grow love in our hearts? Let us try a simple exercise.

Sit comfortably cross-legged on the floor in a quiet and calm place. Keep your spine straight but relaxed. Take a deep breath in and breathe out slowly. Do this for a few counts, or at least 5 times. You may even chant RAM as you breathe out.

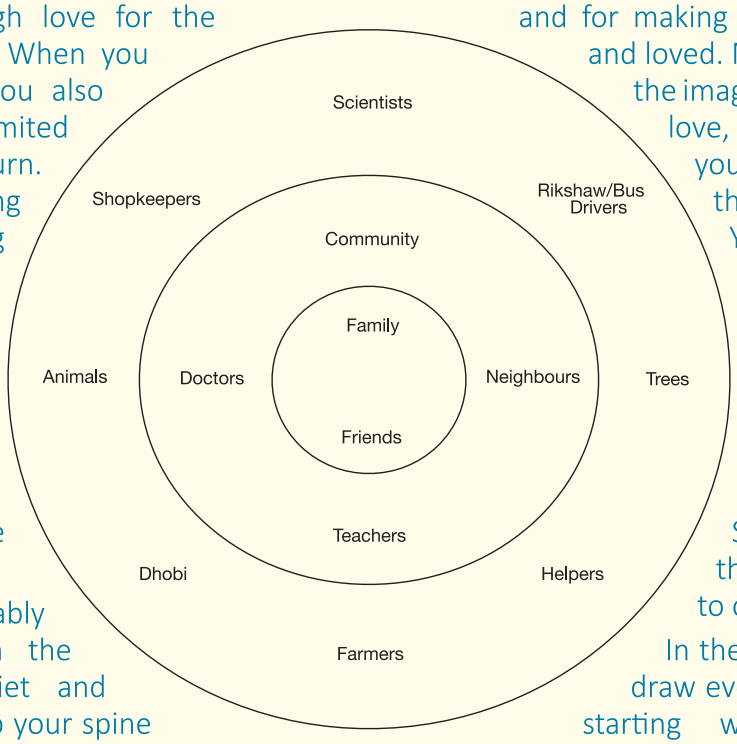

In your mind, send a whole lot of love to RAM for making you strong and healthy, for sending you love and blessings everyday, and for making you feel special and loved. Now slowly bring the images of people you love, one by one in your mind and send them love too. You can imagine hugging them or giving them a high-five, and hold on to that warm and fuzzy feeling in your heart. Slowly expand that circle of love to others.

In the circles, write or draw everyone you love, starting with immediate family and relatives and see how far you are able to expand that love to include everyone and every living thing in your life. ■

Sadhna Satsang (July to December 2024)

Haridwar	30 June to 3rd July	Sunday to Wednesday
Haridwar	16 to 21 July	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 September to 3 October	Monday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	3 to 12 October	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Kapurthala	29 November to 2 December	Friday to Monday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2024)

Mumbai	14 July	Sunday
Obedullagunj	07 September	Saturday
Hoshiarpur	08 September	Sunday
Gurdaspur	29 September	Sunday
Pathankot	27 October	Sunday
Gwalior	07 November	Thursday
Jammu	10 November	Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	24 November	Sunday
Kapurthala	01 December	Sunday
Alampur	03 December	Tuesday
Melbourne	08 December	Sunday
Devas (M.P.)	15 December	Sunday
Surat	22 December	Sunday
Bhiwani	29 December	Sunday

Open Satsang (July to December 2024)

Mumbai	14 - July	Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday to Sunday
Obedullagunj	07 September	Saturday
Hoshiarpur	08 September	Sunday
Rewari	14 to 15 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	27 to 29 September	Friday to Sunday
Pathankot	26 to 27 October	Saturday to Sunday
Gwalior	6 to 7 November	Wednesday to Thursday
Jammu	8 to 10 November	Friday to Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	22 to 24 November	Friday to Sunday
Alampur	3rd December	Tuesday
Melbourne (Australia)	6 to 8 December	Friday to Sunday
Surat	21 to 22 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	28 to 29 December	Saturday to Sunday

Purnima (July to December 2024)

July	21	Sunday
August	19	Monday
September	18	Wednesday
October	17	Thursday
November	15	Friday
December	15	Sunday

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi (July to December 2024)

July	21	Sunday	4.00 PM
August	18	Sunday	10.30 AM
September	22	Sunday	10.30 AM
October	13	Monday	10.30 AM
November	3	Tuesday	11:00 AM
December	8	Wednesday	11:00 AM

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924